नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

अस्थाई युद्ध विराम एक स्वागत योग्य कदम

पश्चिम एशिया एक बार फिर ऐसे मोड़ पर खड़ा है, जहां हर निर्णय का असर केवल क्षेत्रीय नहीं बल्कि वैश्विक स्तर पर महसूस किया जाता है. ईरान, अमेरिका और इजरायल के बीच 14 दिनों के युद्धविराम की घोषणा इसी जटिल भू-राजनीतिक परिदृश्य का ताजा संकेत है. यह युद्धविराम स्थायी शांति का वादा नहीं करता, बल्कि एक रणनीतिक विराम है, जिसमें सभी पक्ष अपने-अपने हितों को साधने की कोशिश में लगे हैं.

मंगलवार को हुए इस समझौते को केवल सैन्य गतिविधियों को रोकने की पहल मानना पर्याप्त नहीं होगा. इसके पीछे कूटनीतिक दबाव, वैश्विक आर्थिक चिंताएं और क्षेत्रीय शक्ति संतुलन की गहरी परतें छिपी हुई हैं. खासतौर पर हॉर्मुज जलडमरूमध्य का मुद्दा, जो वैश्विक तेल आपूर्ति का प्रमुख मार्ग है, इस पूरे घटनाक्रम का केंद्र बिंदु बनकर उभरा है. अमेरिका ने स्पष्ट कर दिया है कि इस जलमार्ग की सुरक्षा और संचालन बहाल करना उसकी प्राथमिकता है, क्योंकि इसका सीधा असर वैश्विक अर्थव्यवस्था और ऊर्जा बाजार पर पड़ता है.

दूसरी ओर, ईरान का रुख इस युद्धविराम को लेकर सतर्क और रणनीतिक है. उसने इसे युद्ध का अंत नहीं, बल्कि एक 'टैक्टिकल हॉल्ट' बताया है. यह संकेत देता है कि तेहरान अभी भी अपनी सैन्य और राजनीतिक स्थिति को मजबूत करने के प्रयास में है. ईरान द्वारा प्रस्तुत 10-सूत्रीय प्रस्ताव भी इसी दिशा में एक कूटनीतिक पहल है, जो उसे बातचीत की मेज पर मजबूत स्थिति में खड़ा करने का प्रयास करता है. इस पूरे घटनाक्रम में आगामी वार्ताएं अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जा रही हैं, जिनमें तनाव कम करने और स्थायी समाधान की संभावनाओं पर चर्चा होगी. हालांकि, यह भी उतना ही सच है कि इस क्षेत्र की जटिलताएं इतनी गहरी हैं कि किसी भी वार्ता से त्वरित और ठोस परिणाम निकलना आसान नहीं होगा.

अमेरिका के लिए यह युद्धविराम एक संतुलन साधने का प्रयास है. एक ओर वह अपने सहयोगी इजरायल की सुरक्षा सुनिश्चित करना चाहता है, वहीं दूसरी ओर वह सीधे युद्ध में उलझने से भी बचना चाहता है. डोनाल्ड ट्रंप का रुख यह दर्शाता है कि वे कूटनीति और दबाव दोनों का इस्तेमाल एक साथ कर रहे हैं. इजरायल के लिए यह स्थिति और भी संवेदनशील है. उसकी सुरक्षा चिंताएं वास्तविक हैं और वह ईरान के किसी भी सैन्य विस्तार को अपने अस्तित्व के लिए खतरा मानता है. ऐसे में यह युद्धविराम उसके लिए राहत तो है, लेकिन स्थायी समाधान नहीं.

इस 14 दिन के युद्धविराम की सबसे बड़ी चुनौती यही है कि यह विश्वास की कमी के बीच हुआ है. सभी पक्ष एक-दूसरे पर संदेह करते हैं और यही संदेह किसी भी समझौते को कमजोर बना सकता है. इतिहास गवाह है कि ऐसे अस्थायी युद्धविराम अक्सर छोटे से उकसावे में टूट जाते हैं. कुल मिलाकर यह कहना गलत नहीं होगा कि यह युद्धविराम शांति की दिशा में एक छोटा कदम जरूर है, लेकिन मंजिल अभी बहुत दूर है. अगर इस अवधि का उपयोग ईमानदारी से संवाद और समाधान के लिए किया जाता है, तो यह एक बड़े बदलाव की शुरुआत बन सकता है. लेकिन यदि यह केवल रणनीतिक पुनर्संयोजन का समय बनकर रह गया, तो आने वाले दिनों में तनाव और भी खतरनाक रूप ले सकता है. बहरहाल, अस्थाई ही सही मौजूदा संकट में यह फौरी युद्ध विराम एक स्वागत योग्य कदम माना जाना चाहिए.

आइए, हम भारत की नारी शक्ति को सशक्त करें

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

> यह समय सामूहिक संकल्प का है. यह किसी एक सरकार, एक दल या एक व्यक्ति का विषय नहीं है. यह पूरे राष्ट्र का विषय है. हमें मिलकर इस कदम के महत्व को समझना है और मिलकर ही इसे साकार करना है. यही हमारी नारी शक्ति के प्रति हमारा दायित्व भी है, इसलिए महिला आरक्षण बिल को पारित कराने के लिए सहमति बहुत जरूरी है. इसे बड़े राष्ट्रीय हित को ध्यान में रखकर देखा जाना चाहिए. ऐसे अवसर हमें यह याद दिलाते हैं कि कुछ फैसले अपने समय से बड़े होते हैं. वे आने वाली पीढ़ियों की दिशा तय करते हैं. ये हमें याद दिलाते हैं कि लोकतंत्र की असली ताकत समय के साथ खुद को और अधिक न्यायपूर्ण और अधिक समावेशी बनाने की क्षमता में होती है. संसद का यह ऐतिहासिक सत्र करीब आ चुका है. मैं सभी दलों के सांसदों से हमारी नारीशक्ति के लिए इस महत्वपूर्ण कदम का समर्थन करने का आग्रह करता हूं. हम जिम्मेदारी और दृढ़ संकल्प के साथ इस दायित्व को पूरा करें. आइए, हम अपने लोकतंत्र की सर्वोच्च परंपराओं के अनुरूप इसमें अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें.

21वीं सदी की विकास यात्रा में हमारा भारत एक महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक क्षण की ओर आगे बढ़ रहा है. आने वाले दिनों में हम अपने लोकतंत्र को और मजबूत करने वाली एक बड़ी पहल के साक्षी बनने वाले हैं. यह ऐसा अवसर है, जब समानता, समावेशन और जनभागीदारी के प्रति हमारी राष्ट्रीय प्रतिबद्धता एक नए रूप में सामने आएगीहै. यह ऐसा समय है, जब हमारे देश की संसद को एक महत्वपूर्ण दायित्व निभाना है. उसे ऐसा कदम आगे बढ़ाना है, जो हमारे लोकतंत्र को अधिक व्यापक एवं और अधिक प्रतिनिधिक बनाए. संसद का यह निर्णय महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को नई शक्ति देगा और लोकसभा और विधानसभाओं संस्थाओं में उनका उचित स्थान सुनिश्चित करेगा.

यह क्षण इसलिए भी विशेष है, क्योंकि यह ऐसे समय में आ रहा है जब देश का वातावरण उत्सव, नवीनता और सकारात्मकता से भरा हुआ है. आने वाले दिनों में भारत के अलग अलग हिस्सों में अनेक पर्व मनाए जाएंगे. असम के लोग रोंगाली बिहू मनाने वाले हैं, और ओडिशा में महा बिशुबा पणा संक्रांति का उत्सव मनाया जाएगा. पश्चिम बंगाल में पोइला बैशाख के साथ बंगाली नववर्ष की शुरुआत होगी. केरलम में विषु पूरे उत्साह के साथ मनाया जाएगा. तमिलनाडु के लोग उत्सुकता से पुथांडु की प्रतीक्षा कर रहे हैं, तो पंजाब और उत्तर भारत के अन्य हिस्सों में लोगों को बैसाखी के पर्व का इंतजार है. हमारे ये पावन पर्व हर किसी में एक नई आशा का संचार करने वाले हैं. भारत के साथ-साथ दुनियाभर में इन त्योहारों को मनाने वाले सभी लोगों को मैं हृदय से शुभकामनाएं देता हूं. मैं ये कामना करता हूं कि ये दिव्य और पावन अवसर हम सभी के जीवन में सुख-समृद्धि लेकर आएं.

इसी दौरान 11 अप्रैल से महात्मा फुले की 200वीं जयंती के समारोह भी शुरू होंगे. 14 अप्रैल को हम भारतवासी डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर की जयंती मनाएंगे. ये दोनों तिथियां हमें सामाजिक न्याय और मानवीय गरिमा के उन मूल्यों की भी याद दिलाती हैं, जिन्होंने आधुनिक होते भारत की दिशा तय की हैं. इन्हीं प्रेरणादायी अवसरों के बीच, 16 अप्रैल को संसद की ऐतिहासिक बैठक होगी. महिला आरक्षण को लागू करने से जुड़े महत्वपूर्ण विधेयक पर चर्चा के बाद उसे पारित कराने के लिए विशेष सत्र बुलाया गया है. इसे सिर्फ एक विधायी प्रक्रिया कहना इसके महत्व को कम करके आंकना होगा. यह भारतवर्ष की करोड़ों महिलाओं की आकांक्षाओं का प्रतिबिंब है.

हमारी नारीशक्ति देश की लगभग आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करती है. उन्होंने राष्ट्र निर्माण में अपना अमूल्य योगदान दिया है. आज देश के हर सेक्टर में नारीशक्ति मिसाल बन रही है. साइंस एंड टेक्नोलॉजी से लेकर एंटरप्रेन्योरशिप तक, खेल के मैदान से लेकर सशस्त्र बलों तक और संगीत से लेकर कला के क्षेत्र में महिलाएं अपनी सशक्त पहचान बना रही हैं. हमारी माताएं-बहनें और बेटियां देश की प्रगति में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं. हमारे पारंपरिक मूल्य बताते हैं कि कोई भी समाज तभी प्रगति करता है, जब माताओं-बहनों को आगे बढ़ने के ज्यादा से ज्यादा मौके मिलते हैं. इसी सोच के साथ बीते 11 वर्षों में महिला सशक्तिकरण के लिए एक अनुकूल माहौल तैयार करने पर जोर दिया गया है, इसके लिए निरंतर प्रयास किए गए हैं. शिक्षा तक बढ़ती पहुंच, बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं, वित्तीय समावेशन में बढ़ोतरी और बुनियादी सुविधाओं तक बेहतर पहुंच ने आर्थिक और सामाजिक जीवन में महिलाओं की भागीदारी को मजबूती दी है.

लेकिन ये भी सच्चाई है कि इन सारे प्रयासों के बावजूद भी राजनीति और विधायी संस्थाओं में महिलाओं प्रतिनिधित्व समाज में उनकी भूमिका के अनुरूप नहीं रहा है. इस कमी को अब दूर किया जाना चाहिए, क्योंकि जब महिलाएं प्रशासन चलाने और प्रशासनिक निर्णयों में हिस्सा लेती हैं, तो उनका अनुभव और विजन बहुत काम आता है. इससे चर्चा तो समृद्ध होती ही है, क्वालिटी ऑफ गवर्नेंस में सुधार भी होता है. महिलाओं की भागीदारी बढ़ाना केवल प्रतिनिधित्व का विषय नहीं है, ये हमारे लोकतंत्र को अधिक संवेदनशील, अधिक संतुलित और अधिक उत्तरदायी बनाने का प्रयास है.

पिछले कई दशकों में लोकतांत्रिक संस्थाओं में महिलाओं को उनका उचित स्थान दिलाने के लिए बार-बार प्रयास हुए हैं. समितियां गठित की गईं, विधेयकों के मसौदे प्रस्तुत किए गए, लेकिन वे कभी पारित नहीं हो सके. फिर भी, इस बात पर व्यापक सहमति रही है कि विधायी निकायों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ना चाहिए. सितंबर 2023 में संसद ने सर्वसम्मति से नारी शक्ति वंदन अधिनियम पारित किया था. यह मेरे जीवन के सबसे विशेष अवसरों में से एक रहा है. अब जरूरत है कि 2029 के लोकसभा चुनाव और आने वाले समय में राज्यों के विधानसभा चुनाव महिला आरक्षण के प्रावधानों के साथ कराए जाएं.

महिलाओं के लिए आरक्षण सुनिश्चित करने का यह अवसर हमारे संविधान की मूल भावना के साथ गहराई से जुड़ा है. हमारे संविधान निर्माताओं ने एक ऐसे समाज की कल्पना की थी, जहां समानता न केवल संविधान में निहित हो, बल्कि उसे व्यवहार में भी लाया जाए. विधायी संस्थाओं में महिलाओं की भागीदारी को सुनिश्चित करना, उस परिकल्पना को साकार करने की दिशा में एक अहम कदम है. यह एक ऐसे समाज के निर्माण के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का प्रतीक है, जिसमें राष्ट्र का भविष्य तय करने में प्रत्येक नागरिक की समान भूमिका हो.

अब इस निर्णय को और टाला नहीं जा सकता. दशकों से इसकी आवश्यकता को स्वीकार किया गया है. इस पर चर्चा हुई है, इसे बार बार दोहराया गया है. अगर अब भी हम इसे आगे टालते हैं, तो उसका अर्थ यही होगा कि हम उस असंतुलन को और लंबा खींच रहे हैं, जिसे हम पहचानते भी हैं और सुधारने की क्षमता भी रखते हैं. आज भारत पूरे आत्मविश्वास और दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है. इसलिए ये जरूरी है कि हमारी संस्थाएं सभी नागरिकों, विशेष रूप से हमारी आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करने वाली महिलाओं की आकांक्षाओं का सम्मान करें. इससे न सिर्फ दशकों पुराना संकल्प पूरा होगा, बल्कि विकास की गति को बनाए रखने में भी बहुत मदद मिलेगी. यह हमारे लोकतंत्र को अधिक उत्तरदायी बनाने और भविष्य के अनुरूप तैयार करने की दिशा में एक अहम कदम होगा.

यह समय सामूहिक संकल्प का है. यह किसी एक सरकार, एक दल या एक व्यक्ति का विषय नहीं है. यह पूरे राष्ट्र का विषय है. हमें मिलकर इस कदम के महत्व को समझना है और मिलकर ही इसे साकार करना है. यही हमारी नारी शक्ति के प्रति हमारा दायित्व भी है, इसलिए महिला आरक्षण बिल को पारित कराने के लिए सहमति बहुत जरूरी है. इसे बड़े राष्ट्रीय हित को ध्यान में रखकर देखा जाना चाहिए. ऐसे अवसर हमें यह याद दिलाते हैं कि कुछ फैसले अपने समय से बड़े होते हैं. वे आने वाली पीढ़ियों की दिशा तय करते हैं. ये हमें याद दिलाते हैं कि लोकतंत्र की असली ताकत समय के साथ खुद को और अधिक न्यायपूर्ण और अधिक समावेशी बनाने की क्षमता में होती है. संसद का यह ऐतिहासिक सत्र करीब आ चुका है

मैं सभी दलों के सांसदों से हमारी नारीशक्ति के लिए इस महत्वपूर्ण कदम का समर्थन करने का आग्रह करता हूं. हम जिम्मेदारी और दृढ़ संकल्प के साथ इस दायित्व को पूरा करें. आइए, हम अपने लोकतंत्र की सर्वोच्च परंपराओं के अनुरूप इसमें अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें.

ग्वालियर चंबल डायरी

मिशन 28 के लिए चंबल में जीत का मंत्र दे गए खंडेलवाल

हरीश दुबे

ऐसे वक्त जब ग्वालियर चंबल क्षेत्र में समूची भाजपा 'मूल' और 'महल' के बंटवारे में फंसी है और अंचल के दोनों छत्रपों सिंधिया और नरेन्द्र सिंह के बीच दूरियां साफ दिख रही हैं, पार्टी के सूबा सदर का चंबल के दोनों बड़े जिलों भिंड और मुरैना सहित ग्वालियर का दौरा करना राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जा रहा है. सियासी हलकों में सवाल यही पूछा जा रहा है कि क्या इस दौरे का मकसद मिशन 2028 के लिए पार्टी को एकजुट करते हुए नेताओं के गिले शिकवे दूर कर चुनावी चुनौतियों से मुक़ाबिल होने के लिए पार्टी को मजबूत करना है. फिलवक्त तो यही नजर आता है. अंचल के तीनों जिलों में जनप्रतिनिधियों से मुलाकात में यही निष्कर्ष उभरा कि इस अंचल से मिल रहे फीडबैक के प्रति वे गंभीर हैं और किसी भी सूरत में पार्टी में गुटबाजी पनपने या किसी भी नेता द्वारा इसे प्रश्रय देने के सख्त खिलाफ़ हैं.

दरअसल, विधानसभा चुनाव से पहले पार्टी को स्थानीय निकाय के चुनाव समर में उतरना है. विगत निकाय चुनाव में अंचल की दोनों नगर निगम ग्वालियर और मुरैना भाजपा के हाथ से फिसल कर कांग्रेस के खाते में चली गई थीं, इसका मलाल आज तक भाजपा को है. बहरहाल, विधानसभा और निकाय चुनाव से पहले भाजपा अपनी कमीपेशियों को दूर कर खुद को हर मोर्चे पर मुकम्मल कर लेना चाहती है, सूबा सदर खंडेलवाल के आज के दौरे का यही मकसद माना जा रहा है. खंडेलवाल ने अपना दौरा मुरैना से शुरू किया और भिंड के बाद ग्वालियर पहुंचे. तीनों जगह उनका जबरदस्त स्वागत हुआ. मुरैना एवं भिण्ड में उनके द्वारा ली गई जिला बैठक, जिला जनप्रतिनिधि बैठक एवं छोटी टोली बैठक में खंडेलवाल ने प्रोटोकॉल की सीमाओं से ऊपर उठकर बेबाक और आत्मीय अंदाज में कार्यकर्ताओं से लेकर पदाधिकारियों और जनप्रतिनिधियों से चर्चा कर उनकी बात सुनी, समस्याएं जानी और शिकायतों के निराकरण के लिए ठोस कदम उठाने का भरोसा दिया. यह सच है कि भाजपा आगामी विधानसभा चुनाव मुख्यमंत्री मोहन यादव और प्रदेश प्रमुख खंडेलवाल के नेतृत्व और मार्गदर्शन में ही लड़ेगी. इस तरह भाजपा को फिर से जीत की दहलीज तक पहुंचाने में सीएम के साथ ही हेमंत खंडेलवाल की भी अहम भूमिका रहेगी. यही वजह है कि सूबा सदर ने मोर्चा संभाल लिया है. यह दौरे का पहला चरण था. वे दूसरे चरण में जल्द ही ग्वालियर, शिवपुरी और दतिया जिलों का भी ऐसा ही सघन दौरा करेंगे, जिसकी तैयारी भी शुरू हो गई है.

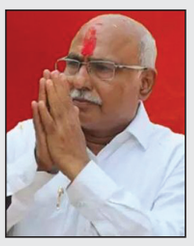

हाईटेक दफ्तर बनाने में जुटा कमल दल

अंततः भाजपा को नया सर्वसुविधायुक्त जिला कार्यालय मिलने का पथ प्रशस्त हो गया है. सिंधिया और नरेन्द्रसिंह ने पार्टी के वरिष्ठ नेताओं के साथ अलापुर में भूमिपूजन किया. करीब साठ साल पहले महाराज बाड़े के समीप मुखर्जी भवन में जनसंघ के कार्यालय का शुभारंभ हुआ था जो अस्सी में भाजपा के दफ्तर के रूप में बदल गया. इस भीड़भाड़ वाले इलाके में पार्किंग की समस्या रहती है, कई साल तक रेसकोर्स रोड के 38 नंबर सरकारी बंगले से दफ्तर चलाया गया. पिछले कई लोकसभा और निगम चुनाव में भाजपा ने मानिक विलास स्थित मोदी हाउस को अपना ठौर बनाया. इस बीच सर्वसुविधासंपन्न जिला कार्यालय बनाने के लिए शहर में जगह की तलाश चलती रही, शहर के प्रवेश द्वार स्थित अलापुर पर जाकर यह तलाश पूरी हुई और साल भर में पार्टीजनों को नया हाईटेक दफ्तर मिल जाएगा.

क्या चंबल में बेकाबू हो गया है रेत माफिया

चंबल अंचल में रेत माफिया इतना बेखौफ है कि वह वन चौकियों, पुलिस थानों पर भी हमला करने से नहीं हिचकिचाता. यहां तक कि ठीक 14 साल पहले 8 मार्च 2012 को चंबल रेंज में आईपीएस अफसर नरेंद्र कुमार को रेत माफिया ने ट्रैक्टर ट्रॉली से कुचलकर मार डाला था. शहीद आईपीएस नरेंद्र की धर्मपत्नी आईएएस मधु रानी तेवतिया इन दिनों दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता की सचिव हैं. दिसंबर 2018 में भी रेत माफिया ने चंबल में तैनात डिप्टी रेंजर सूबेदार कुशवाहा को और इससे पहले मार्च 2015 में कांस्टेबल धर्मेंद्र चौहान को पत्थरों से भरी ट्रॉली से कुचलकर मार डाला था. आज बुधवार को फिर वही खौफनाक कहानी दोहराई गई जब रेत का अवैध परिवहन रोकने पहुंचे वन रक्षक हरकेश गुर्जर को रेत माफिया ने ऐन सुबह रेत से भरे ट्रैक्टर से कुचलकर मार दिया. जाहिर है कि राजनीतिक संरक्षण और महकमे में बड़े स्तर पर मिलीभगत के बगैर रेत माफिया के हौंसले इस कदर बुलंद नहीं हो सकते. जरूरत इस बात की है कि अपने पराए से ऊपर उठकर सख्त कदम उठाए जाएं.

बीजेपी नेताओं को 'मामा' बनने का शौक

केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान जब मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री थे तब राज्य भर में 'मामा' कहलाते थे. 'लाड़ली बहन' योजना चलाने, लड़कियों को स्कूल जाने के लिए साइकिल उपलब्ध कराने तथा कन्या के विवाह में भेंटवस्तु देने से उनका 'मामा' बन जाना स्वाभाविक था. अब असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने भी 'मामा अवतार' धारण कर लिया है. गत माहउन्होंने असम की 40 लाख महिलाओं में से प्रत्येक के बैंक खाते में 9,000 रुपए जमा कराए. इसे 'मामा का उपोहार' नाम दिया गया. असम के लगभग आधे परिवारों को यह आर्थिक सहायता मिली. इन परिवारों को पहले से ही अरुणोदोयी 3 योजना के तहत 1,250 रुपए प्रतिमाह मिल रहे थे. एक साथ 9,000 रुपए की रकम मिलने से उनकी खुशी का ठिकाना न रहा. शिवराज सिंह की लाड़ली बहन योजना ने मध्य प्रदेश की सभी 29 लोकसभा सीटें बीजेपी की झोली में डाल दी थीं. असम में भी 'हिमंत मामा' भारी बहुमत से विधानसभा चुनाव जीतने के प्रति आश्वस्त हैं. क्योंकि कैश ट्रांसफर का अनुकूल असर पड़ता है. बिहार में भी नीतीशकुमार ने हर महिला के खाते में 10,000 रुपए जमा करवाने से जदयू-बीजेपी गठबंधन के लिए चुनावी सफलता पक्की करवाई थी. धन प्रदान करने से चुनावी संबंधों को पारिवारिक रिश्ते का रूप मिल जाता है. असम के बजट की दो तिहाई रकम अनुदान और टैक्स छूट के रूप में केंद्र से आती है. इसके अलावा विशेष श्रेणी वाले राज्य में चलाई जाने वाली राष्ट्रव्यापी योजनाओं का 90 प्रतिशत खर्च केंद्र सरकार उठाती है. इस तरह केंद्र से असम के परिवारों के लिए रकम आती है और राज्य सरकार उसे बांटती है. इसे मामा की भेंट माना जाता है. जब लोगों को मुफ्त में रकम मिलने लगती है तो वह उसमें और वृद्धि की मांग करते हैं. इसके अलावा उनका ध्यान यह भी रहता है कि कोई दूसरी पार्टी इससे ज्यादा रकम का ऑफर तो नहीं दे रही है? इसमें संदेह नहीं कि असम के ग्रामीण परिवार हिमंत बिस्वा सरमा को अपना संरक्षक मानने लगे हैं. मुख्यमंत्री को पता है कि कौन उनके साथ हैं और कौन नहीं. धार्मिक संस्थाओं को भी उनकी सरकार मदद देती है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12223 - डॉ. सागर खादीवाला

बड़े बड़े पदचिन्हों वाला अज्ञात जंतु 2. जिससे आगे और अधिक कुछ न हो 3. एक प्रकार की चौकोर मिठाई, नींबू जैसा एक बड़ा फल 4. पूरी तरह, बढ़िया, सुंदर, अच्छी तरह 5. निषध देश का राजा जिसका विवाह दमयंती से हुआ था 7. पंजाब की पांच नदियों में से एक का नाम 9. किनारा, कूल 12. कनखी से देखना, आंख से संकेत करना 13. एक प्रकार का लाल रंग का बहुमूल्य पत्थर (उर्दू) 15. भोजन, खाना 16. दैत्य, असुर 17. इच्छा, इरादा, विचार 18. माता का भाई 19. दूसरा, अन्य, गैर, परंतु

बाएं से दाएं
1हितकारी उपदेश, सत्परामर्श 4. रक्त, लहू, हत्या (उर्दू) 6. शक्ति, साहस 8. स्थापा, मृत्युशोक, रोना-पीटना (उर्दू) 10. लिप्त, लीन 11. अभिनेता, एक जाति 12. शवदाह के समय खोपड़ी फोड़ने का कार्य 14. सिंह, शेर 16. निशा, रजनी 17. दुर्गा, गौतम बुद्ध की माता का नाम 19. पंद्रह दिन का पखवाड़ा 20. नरम या मुलायम होना अथवा करना, नम्र होना. 21. काव्य अथवा साहित्य के मर्म को समझने वाला

ऊपर से नीचे
1. हिमालय की बर्फीली चोटियों पर

Solution 12222

मौ	स	म		वि	स्था	पि	त
त	मा		रं	ज			प्त
	ज	य	ज	य	का	र	
प		शो	क		सिं		प्र
त	म	गा		प्र	द	क्षि	णा
न	य	न		शि			ली
	खा		प	क्ष	पा	त	
अ	ना	व	र	ण		था	ती

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारम्भ में व्यर्थ वाद विवाद से मन खिन्न रहेगा. भोग विलास में धन व्यय होगां यात्रा में कष्ट होगा. स्वास्थ्य संबंधी गड़बड़ी रहेगी. वर्ष के मध्य में विदेशी व्यापारियों के लिये लाभप्रद रहेगा. सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी. वर्ष के मध्य में मित्रों के सहयोग से नवीन योजनाओं का समाधान होगा. राजनैतिक रूपरेखा बनेगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों के लिये समय सहयोगात्मक रहेगा. नवीन योजनाओं की रूपरेखा बनेगी. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को प्रवास आदि के योग बनेंगे. कर्क राशि के व्यक्तियों को भोग विलास में धन व्यय होगा. सिंह राशि के व्यक्तियों का विदेश व्यापार में अनुबंध होगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को यात्रा में कष्ट होगा. मकर और कुम्भ राशि के व्यक्तियों को जमीन जायजाद आदि से लाभ का योग है.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर, स्वस्थ्य, हष्टपुष्ट एवं चंचल बुद्धिमान एवं परोपकारी होगा, रचनात्मक कार्यो में विशेष निपुण होगा, माता पिता का विशेष भक्त होगा, मित्रों की संख्या सीमित होगी, जन्म स्थान से दूर रहकर उन्नति करेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

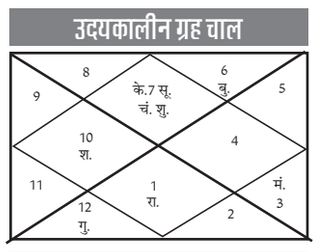

पंचांग

रा.मि. 19 संवत् 2083 वैशाख कृष्ण सप्तमीं गुरूवासरे शाम 6/1, मूल नक्षत्रे प्रातः 6/8, परिघ योगे दिन 3/30, वव करणे सू.उ. 5/46, सू.अ. 6/14, चन्द्रचार धनु, शु.रा. 9,11,12,3,5,7 अ.रा. 10,1,2,4,6,8 शुभांक-2,4,8.

व्यापार भविष्य

वैशाख कृष्ण सप्तमीं को मूल नक्षत्र के प्रभाव से पीली, काली, रंग की वस्तुओं का जोरदार उछाल आयेगा, किन्तु आज के बने भाव घटेंगे, सफेद रंग की वस्तुओं का समावेश होगा. व्यापारी वर्ग बाजार का रूख देखकर कार्य करें. भाग्यांक 2694 है.

मेष- बीती बातों को याद करके निजी संबंध में कटुता बढ़ेगी, लाभदायक अवसर मिलेगा, नये कार्य को जहां तक बने टालना हितकर रहेगा.

वृषभ- अटका धन मिलने के आसार हैं, सामाजिक प्रतिष्ठा, मान सम्मान मिलेगा, अनावश्यक विवादों को टालें, प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी. लाभ होगा.

मिथुन- सफ्लता के लिये कार्यो में गति बढ़ायें, जवृश्चिक जायजाद के कार्यो में सफ्लता मिलेगी, मित्रों का सहयोग रहेगा, अतिथि आगमन का योग है.

कर्क- मित्रों की मदद से बिखरे कार्य समेटने में मदद मिलेगी, कार्यो में सफ्लता मिलेगी, रूका धन प्राप्त होगा, निजी पुरूषार्थ बढ़ेगा.

सिंह- मित्रों की कहासुनी का मलाल रहेगा, आपकी बुद्धिमानी एवं सूझबूझ से शत्रुवर्ग परास्त होगा, कार्यक्षमता में वृद्धि होगी, यात्रा एवं लाभ मिलेगा.

कन्या- उच्च अध्ययन पर विचार होगा, धार्मिक कार्यो में रूचि रहेगी, जवृश्चिक जायजाद प्रापर्टी आदि के कार्यो में सफ्लता मिलेगी, सुख शांति में वृद्धि होगी.

तुला- बुजुर्गो के स्वास्थ्य का ध्यान रखें, अधिकारी वर्ग प्रसन्न रहेगा, व्यापारिक क्षेत्र में अत्याधिक विश्वास न करें, खरीदी बिकी के कार्य में व्यस्त रहेंगे.

वृश्चिक- साझेदारी में बड़ी योजना शुरू कर सकते हैं, पुराने मित्रों से भेंटवार्ता होगी, आर्थिक मदद मिलेगी, परिश्रम अधिक करना होगा.

धनु- कुछ लोग आपको अंधेरे में रखकर नुकसान पहुंचा सकते हैं, अधिकारियों से मदद मिलेगी, नवीन योजनाओं में संलग्नता रहेगी, मांगलिक कार्यों पर विचार होगा.

मकर- कानूनी मामलों में सावधानी से निर्णय लेने की जरूरत है, गफ्लतबाजी से बचना चाहिए, मित्र वर्ग मदद करेंगे, व्यर्थ वाद विवाद से बचें.

कुम्भ- बने बनाये कार्यों में अचानक व्यवधान आ सकता है, मित्रों का सहयोग रहेगा, धार्मिक कार्यों में रुचि रहेगी. दिन के उत्तरार्ध में कष्ट हो सकता है.

मीन- आर्थिक कार्यों में सफ्लता मिलेगी, जोखिम के कार्यों में रूचि रहेगी, निजी पुरूषार्थ बढ़ेगा. व्यापार में उन्नति का योग है, मित्र मिलन होगा.

SUDOKU 7355

8		4	3	9	7	5		6
3					2			
		7	6	5				4
9	6		5			1		7
5		1	4		9	8		2
4		8					5	3
2				6	1	4		
			7					8
7		9	8	3	5	6		1

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7354

7	8	4	9	5	2	6	1	3
9	6	2	4	3	1	8	5	7
1	3	5	7	8	6	2	4	9
4	2	3	6	1	5	9	7	8
8	5	9	2	4	7	1	3	6
6	7	1	3	9	8	4	2	5
3	1	7	8	6	4	5	9	2
5	9	6	1	2	3	7	8	4
2	4	8	5	7	9	3	6	1